7

बच्चों के पालन-पोषण की तीन बातें

वचन पाठ: नीतिवचन 22:6

पांच वर्ष तक के बच्चों की क्लास टीचर ने अपना पाठ जल्दी खत्म कर लिया था।[1] अपने छात्रों से उसने मेज़ पर सिर रखकर कोई अच्छी बात सोचने के लिए कहा। हर छात्र से पूछते हुए कि उसने क्या ''अच्छी बात'' सोची, वह हर मेज़ के पास जा रही थी। एक छोटी लड़की ने कहा ''मैंने सोचा कि मैं गर्भवती हूं।'' परेशान टीचर ने पूछा कि उसके मन में यह ''अच्छी बात'' कहां से आई। छोटी लड़की ने उत्तर दिया, ''आज सुबह जब मेरी मम्मी नाश्ता लेकर आई, तो कहने लगी कि मैं गर्भवती हूं और डैडी कहने लगे कि 'यह तो बड़ी अच्छी बात है।' ''[2]

एक बच्चा आने वाला है ''अच्छी बात'' है, परन्तु यह परेशानी की भी बात है। कई भावी माता-पिता को शिमशोन के पिता मानोह की तरह लगता है, जिसने परमेश्वर से अपने दूत को फिर से भेजने का आग्रह किया था, ताकि वह ''हमें सिखाए कि जो बालक उत्पन्न होने वाला है, उससे हम क्या करें'' (न्यायियों 13:8)।

अपने बच्चों के लिए ''क्या करें'' सीखने के लिए हम बाइबल में कई जगह देख सकते हैं, परन्तु इस पाठ में हम नीतिवचन 22:6 पर ही ध्यान केन्द्रित रखेंगे। पिछले पाठ में हमने ''बच्चे के पालन-पोषण की परमेश्वर की मुख्य योजना'' के लिए व्यवस्थाविवरण 6 में देखा कि इस पाठ में हम उसी आधार पर काम करना चाहते हैं।

नीतिवचन 22:6 हम में से कइयों का जाना-पहचाना है: ''लड़के को शिक्षा उसी मार्ग की दें, जिस में उसको चलना चाहिए, और वह बुढ़ापे में भी उस से न हटेगा।'' इस वचन से हम ''बच्चों के पालन-पोषण की तीन बातों'' का पता लगाएंगे। स्कूलों द्वारा अपना ध्यान शिक्षा के ''तीन R'' से हटाने पर,[3] उन स्कूलों को बच्चों को पढ़ाना नहीं आया। यदि माता-पिता ''बच्चों के पालन-पोषण की तीन बातों'' को नज़रअंदाज़ करते हैं तो परिणाम इससे भी भयंकर होंगे।

ज़िम्मेदारी

पहली ''बात'' है ज़िम्मेदारी: माता-पिता के रूप में अपने बच्चों को पढ़ाना और

सिखाना *हमारी* ज़िम्मेदारी है (देखें व्यवस्थाविवरण 6:3-7; इफिसियों 6:4)। हमारे वचन पाठ में उस ज़िम्मेदारी पर इन शब्दों में ज़ोर दिया गया है कि ''लड़के को शिक्षा'' दें। इस वाक्यांश में मुख्य शब्द ''लड़का'' और ''शिक्षा'' है।

आइए पहले ''शिक्षा'' शब्द को देखते हैं: लड़के को *शिक्षा* देने का क्या अर्थ है? इस शब्द की परिभाषाओं में इस प्रकार के विचार मिलते हैं: (1) उम्मीद के अनुसार बढ़ाना (जैसे जाल के ऊपर दाख); (2) निर्देश, अनुशासन या कठोर अनुशासन से आकार देना; (3) कुशलता की परीक्षा के लिए (अभ्यास के द्वारा) तैयार होना। इसलिए हम दास को शिक्षा देने, किसी पशु को सिखाने या किसी एथलेटिक इवेंट के लिए शिक्षा देने की बात करते हैं।

अंग्रेज़ी शब्द पर विचार करने से भी हम देखते हैं कि शिक्षा या ट्रेनिंग के लिए समय और प्रयास आवश्यक होता है। इसलिए हमें समझना आवश्यक है कि अपने बच्चों को शिक्षा देने के लिए हमें समय देने का प्रयास करना आवयश्क है, चाहे हम उन्हें प्रभु की सेवा के लिए शिक्षा देने की बात कर रहे हों या उन्हें अपने बिस्तर लगाने और कपड़े टांगने जैसे व्यावहारिक कामों की शिक्षा देने की।

बताने, सिखाने और शिक्षा देने में अन्तर किया जाना आवश्यक है। बताना अच्छा है; सिखाना उससे भी अच्छा, परन्तु शिक्षा देना सबसे बेहतर है। तीनों में क्या फर्क है? मैं समझाता हूं:[4] आपका बच्चा घर में आने पर धम से दरवाज़ा मारता है। (मान लो कि उसका नाम जॉनी है।) आप कहते हैं, ''बेटा जॉनी, दरवाज़ा धीरे बन्द करते हैं।'' यह *बताना* है। हो सकता है कि आप समय निकाल कर उसे समझाएं कि आप *क्यों* नहीं चाहते कि वह दरवाज़ा ज़ोर से मारे: ''इससे दरवाज़ा खराब होता है और फिर इसका शोर मेरे सिर में लगता है।'' इसे *सिखाना* कहा जाएगा। क्या हो यदि आप निर्णय लें कि समय आ गया है कि जॉनी की दरवाज़ा ज़ोर से बन्द करने की आदत छुड़ाई जाए? हो सकता है कि आप उसे बताएं कि इसके बाद जब भी ज़ोर से दरवाज़ा बन्द करेगा, उसे बाहर जाकर फिर से अन्दर आना होगा और फिर *पच्चीस बार* धीरे से दरवाज़ा बन्द करना पड़ेगा। यदि आप इस योजना पर अमल करते हैं और अपनी बात पर टिके रहते हैं तो यह *शिक्षा देना* है।

शिक्षा देने के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''train'' के कई अर्थ हैं, परन्तु इब्रानी शब्द, जिसका अनुवाद ''शिक्षा देना'' हुआ है, उसका इससे कहीं अधिक अर्थ है। मूल में यह शब्द ''तालु अर्थात मुंह के ऊपर के भाग, मसूड़े'' के लिए है। क्रिया रूप में यह नये घोड़े के मुंह में रस्सी डालकर उसे सिधाने के लिए इस्तेमाल होने वाला शब्द था। इस शब्द का इस्तेमाल जन्म के तुरन्त बाद धायी के कार्य के विवरण के लिए भी किया जाता था, जो पिसी हुई ख़जूरों के रस में उंगली डुबोकर नवजात केमुंह में लगाती और उसके मसूड़ों और तालु पर मल देती थी, जिससे उसे स्वाद का बोध हो और उसे प्यास लगे। फिर वह बच्चे को उसकी मां की गोद में रख देती। इस शब्द का इस्तेमाल कई बार अपने बच्चे के लिए मां द्वारा मुंह में खाना चबाने की प्रक्रिया (बच्चों का डिब्बा-बंद खाना बाज़ार में आने से पहले) के वर्णन के लिए भी किया जाता था, जिससे वह ठोस आहार खाना सीख सकता था। अन्त में

इस शब्द का अर्थ ''समर्पित करना, अभिषेक करना'' हो गया। बच्चों पर लागू करने पर अनुवादित शब्द ''शिक्षा देना'' के इब्रानी शब्द में यह जानना जुड़ जाता है कि बच्चे को मानसिक विकास के लिए कहां होना चाहिए और उसे उस स्तर तक लाने के लिए जो कुछ भी किया जाना आवश्यक हो, वह किया जाएगा।

इसके बाद ''लड़का'' शब्द पर विचार करते हैं, क्योंकि कई बार इस शब्द का अर्थ गलत लिया जाता है। इब्रानी शब्द का अनुवाद ''लड़का'' केवल बहुत छोटे बच्चे को ही नहीं कहा गया। 1 शमूएल 4:21 में इस शब्द का इस्तेमाल नवजात शिशु के लिए और 1 शमूएल 1:27 में अभी-अभी दूध छुड़ाए लड़के के लिए किया गया है। उत्पत्ति 21:16 में यही शब्द युवावस्था से पहले के लड़के के लिए, उत्पत्ति 37:2 में सत्रह वर्ष के लड़के के लिए और उत्पत्ति 34:19 में विवाह के योग्य युवक के लिए किया गया है। इस प्रकार यह शब्द नवजात से लेकर युवक होने तक माता-पिता की छत्र छाया में रहने वाले हर वर्ष के बेटे या बेटी पर लागू होता है।[6]

''लड़के'' और ''शिक्षा'' शब्दों के सभी अर्थों को ध्यान में रखते हुए हम देख सकते हैं कि ''बच्चे को शिक्षा'' देने केलिए हमारी क्या ज़िम्मेदारी है:

(1) अपने बच्चों को शिक्षा देने के लिए *ज्ञान* होना आवश्यक है। और आवश्यक जानकारी में, हमें अपेक्षित ''अन्तिम प्रतिफल'' की जानकारी होना आवश्यक है। हमें पता होना आवश्यक है कि उस लक्ष्य तक कैसे पहुंचना है।

(2) अपने बच्चों को शिक्षा देने के लिए *समय* की आवश्यकता है। जैसा कि मैंने इस शृंखला में पहले कहा है, आवश्यक समय ढूंढ़ना कई माता-पिता के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है।[6] बहुत पुरानी बात है, जिसमें एक सेवक ने किसी कैदी की रक्षा की अपनी ज़िम्मेदारी के बारे में यह बहाना बनाया था: ''उसके बाद तेरा दास काम में इधर-उधर काम में फंस गया, फिर वह न मिला'' (1 राजाओं 20:40)।[7] कई माता-पिता बस यूं ही ''इधर-उधर व्यस्त'' हैं। एक दिन उन्हें पता चलेगा कि उनके जीवन के लिए अशिक्षित और बिना तैयारी के हैं।

अपने बच्चों को समय दिए बिना हम उन की शिक्षा के लिए आवश्यक कामों में से कोई नहीं कर सकते। इस पर विचार करें: हमारे पास अपने बच्चे केवल थोड़ी देर के लिए हैं। हमें चाहिए कि उस समय के लिए हम अपनी प्राथमिकताएं तय कर लें और उन्हें शिक्षा देने के लिए समय निकालें। क्या यह सच नहीं है कि मेहमानों को अपने घर बुलाने पर हम आमतौर पर उनके लिए अपनी समयसारिणी में बदलाव लाते हैं और उनकी आवश्यकता के अनुसार करते हैं? क्या हमें अपने बच्चों के लिए भी ऐसा ही नहीं करना चाहिए? 2 कुरिन्थियों 12 में पौलुस ने कुरिन्थियों के लिए अपने प्रेम की तुलना अपने बच्चों के लिए माता-पिता के अपने प्रेम से की (आयत 14)। उसने जोड़ा, ''मैं तुम्हारी आत्माओं के लिए बहुत आनन्द से खर्च करूंगा, वरन आप भी खर्च हो जाऊंगा'' (आयत 15क)। माता-पिता के रूप में हमें अपने बच्चों के लिए ''खर्च करने और खर्च होने'' (KJV) के लिए तैयार रहना आवश्यक है।

(3) अपने बच्चों को शिक्षा देने के लिए *धीरज* की भी आवश्यकता है। जैसे दाखलता, पशुओं, धावकों को रातों-रात सिखाया नहीं जा सकता वैसे ही बच्चों को भी रातों रात शिक्षा नहीं दी जा सकती। हमें ''सब की ओर सहनशीलता'' दिखाने की आज्ञा दी गई है (1 थिस्सलुनीकियों 5:14घ); निश्चय ही इसमें हमारे बच्चे भी आते हैं।

अपने बच्चों को शिक्षा देने की और आवश्यकताओं की बात की जा सकती है। उनमें से एक *संवेदनशीलता* है, जिस पर हम अपने अध्ययन के अगले भाग में चर्चा करेंगे।

आदर

दूसरी बात ''आदर'' है। हमने कई बार इस बात पर ज़ोर दिया है कि आदर मज़बूत, खुशहाल मसीही घर का आवश्यक भाग है। बच्चों का सफलतापूर्वक पालन-पोषण करने के लिए आदर आवश्यक है, जिससे वे जीवन का सामना कर सकें।

विवाह और बच्चों के पालन-पोषण की लगभग हर पुस्तक में पिरोया गया धागा आदर की आवश्यकता है। यही ज़ोर बाइबल में दिया गया मिलता है। ''आदर'' शब्द के साथ ''महिमा'' और ''प्रताप'' की अवधारणा बाइबल के कुछ शब्द हैं जो इस अवधारणा को आगे ले जाते हैं। परिवार के सब सदस्यों के बीच आदर की आवश्यकता पर अति बल नहीं दिया जा सकता।

पिता को माता का आदर करना चाहिए :[10] पतरस ने सब पतियों को चुनौती दी कि ''... बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो और ... उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं, ...'' (1 पतरस 3:7)। नीतिवचन 31 अध्याय में ''आदर्श स्त्री'' की चर्चा में यह लिखा गया है कि उसका पति उठकर ''उसकी प्रशंसा करता है'' (आयत 28)।

माता को पिता का आदर करना चाहिए। पौलुस ने साफ़ कहा, ''पत्नी भी अपने पति का भय माने'' (इफिसियों 5:33ख)। 1 पतरस 3 में गैर-मसीही पति के साथ पत्नी के व्यवहार का ढंग विस्तार से बताया गया है (आयतें 1-6)। इस भाग का आरम्भ ''हे पत्नियो, तुम भी अपने पति के आधीन रहो इसलिए कि ... तुम्हारे भय सहित *पवित्र* चाल-चलन को देखकर बिना वचन के अपनी-अपनी पत्नी के चाल-चलन के द्वारा खिंच जाएं'' (आयतें 1, 2) से होता है। यदि मसीही पत्नी के लिए अपने गैर-मसीही पति का इतना आदर करना आवश्यक है तो विश्वासी पत्नी को अपने विश्वासी पति का कितना आदर करना चाहिए!

बच्चों को अपने माता-पिता का आदर करना चाहिए। इस आदर पर सबसे प्रसिद्ध वचन इफिसियों 6 अध्याय में मिलता है: ''हे बालको, प्रभु में अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनो, क्योंकि यह उचित है। अपनी माता और पिता का आदर कर (यह पहिली आज्ञा है, जिस के साथ प्रतिज्ञा भी है) कि तेरा भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे'' (आयतें 1-3)।[11]

इसके अलावा माता-पिता को अपने बच्चों का आदर करना चाहिए। पौलुस ने पिताओं

को चुनौती दी कि ''अपने बच्चों को रिस न दिलाओ; परन्तु प्रभु की शिक्षा, और चितावनी देते हुए उनका पालन-पोषण करो'' (इफिसियों 6:4)। दि लिविंग बाइबल में इसे इस प्रकार लिखा गया है: ''अपने बच्चों को डांटते या उन पर दोष न लगाते रहो जिससे वे क्रोधित हो कर बुरा मान जाएं।'' फिर पौलुस ने कहा, ''हे बच्चे वालो, अपने बालकों को तंग न करो, न हो कि उन का साहस टूट जाए'' (कुलुस्सियों 3:21)। कुछ माता-पिता का अपमानजनक तरीका बाइबल के इन वचनों का उल्लंघन है: वे अपने बच्चों को ''बहरा'' या ''आलसी'' जैसे नाम देते हैं। इस तथ्य के बावजूद कि उस दोष का दण्ड वे उन्हें कब का दे चुके होते हैं, वे उन्हें उनकी पुरानी बातें याद दिलाते रहते हैं। वे दूसरों के सामने अपने बच्चों की नकारात्मक बातें करते हैं। जेम्स डॉब्सन ने कहा है:

> एकवर्णी काम के रूप में आदर असफल है; इस *दो-मार्गी* सड़क में चलना आवश्यक है। एक मां अपने बच्चे से अपने साथ प्रतिष्ठा भरे व्यवहार की मांग नहीं कर सकती यदि वह उसके साथ वैसा ही व्यवहार नहीं करती; उसे उसके मित्रों के सामने कभी अपमानित या परेशान न करके उसके अहम के साथ नम्र होना चाहिए। दण्ड कभी भी लोगों के सामने नहीं देना चाहिए, बच्चे पर क्रूरतापूर्वक हंसा न जाए। उसकी मज़बूत भावनाओं और विनतियों को मूर्खतापूर्ण होने के बावजूद सम्मानपूर्वक स्वीकृति दी जानी चाहिए। उसे यह महसूस होना चाहिए कि उसके माता-पिता को ''सचमुच उसका ध्यान'' है।[12]

जो माता-पिता चाहते हैं कि बच्चे उनका आदर करें, उन्हें भी बच्चों का आदर करना चाहिए।

अन्त में, बच्चों को एक-दूसरे का आदर करना चाहिए। घर में रोमियों 12:10 के नियम अपेक्षित और आवश्यक व्यवहार होने चाहिए: ''... एक-दूसरे से स्नेह रखो; परस्पर आदर करने में एक-दूसरे से बढ़ चलो।'' विचारों के अन्तर को माना जाना चाहिए, परन्तु अपमान को नहीं। माता-पिता को चाहिए कि पहले घर में और फिर सब का आदर करना सिखाएं।[13]

आदर की अपधारणा वचन पाठ के दूसरे भाग में निहित है, ''जिस मार्ग में उसे जाना है।'' अंग्रेज़ी में ये शब्द यह ज़ोर देते प्रतीत होते हैं कि हमें अपने बच्चों का पालन-पोषण *सही* ढंग (अर्थात परमेश्वर के ढंग) से करना चाहिए। परन्तु इब्रानी बाइबल में वह ज़ोर है जो अंग्रेज़ी में नहीं मिलता यानी ''वह'' शब्द पर ज़ोर। मूल में है ''उसके मार्ग में।''[14]

आइए इन शब्दों की समीक्षा के लिए कुछ समय निकालते हैं? ''मार्ग'' उस इब्रानी शब्द से लिया गया है, जो ''विशेषतया, ढंग या माध्यम'' का सुझाव देता है। नीतिवचन 30:19 में इस शब्द का इस्तेमाल हुआ है, ''आकाश में उकाब पक्षी का मार्ग, चट्टान पर सर्प की चाल समुद्र में जहाज़ की चाल ...'' की बात करता है। भजन संहिता 7:12 और 11:2 में इस्तेमाल किए शब्द का क्रिया रूप जो तीरअंदाज़ों द्वारा कमान कसने को बताता है। अनुवादित शब्द ''संधान'' या ''चढ़ाते'' उसी शब्द के रूप में लिया गया है जिसका

अनुवाद नीतिवचन 22:6 में ''मार्ग'' किया गया है। इस कारण नीतिवचन 22:6 में ''मार्ग'' बच्चे के विशेष गुण या ढंग का संकेत है। कई लोग इसे ''संधान'' कहते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि ''उसके मार्ग *में*'' का अर्थ उन खूबियों ''के साथ रखते, के साथ सहयोग में, के साथ मेल खाते'' है ।

यह हमें ''उसके'' अर्थात ''उसके मार्ग में'' शब्द पर ले आता है। हर बच्चे के साथ चुनौती उसे वह बनाने के लिए विवश करना नहीं है जो हम उसे बनाना चाहते हैं या अपने सपनों को पूरा करने के लिए उसे प्रोत्साहित करते हैं। बल्कि हमारी चुनौती हर बच्चे को ''बच्चे के स्वभाव और व्यक्तित्व की मूल बात'' को ध्यान में रखते हुए शिक्षा देने की है।[15]

हमारे वचन पाठ के इस भाग से कई महत्वपूर्ण सच्चाइयां मिल सकती हैं। आइए उन सच्चाइयां में से पांच पर विचार करते हैं।

(1) हर बच्चा विशेष है क्योंकि हर बच्चा अलग है। मैं माता-पिता को बताता हूं कि उनके बच्चे ''कोरी सलेट'' हैं, जो प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उन पर लिखा जाए। बाइबल में और जीवन के अनुभव से मुझे विश्वास है कि मैंने इस बात को कुछ अधिक कह दिया। हर बच्चा परमेश्वर के दिये हुए कुछ स्वाभाविक गुणों और प्रवृत्तियों के साथ जन्म लेता है। प्रभु ने मूसा को बताया था, ''मनुष्य का मुंह किस ने बनाया है? और मनुष्य को गूंगा, या बहिरा, या देखनेवाला, या अन्धा, मुझ यहोवा को छोड़ कौन बनाता है?''(निर्गमन 4:11; यशायाह 44:24 भी देखें)। यहां तक कि एक ही परिवर में हर बच्चा अलग होता है। कैन और हाबिल, एसाव व याकूब, अबशालोम और सुलैमान में पाई जाने वाली भिन्नताओं पर विचार करें। क्या आपके परिवार में हर कोई एक दूसरे से अलग है? आप जानते हैं कि ऐसा ही है।

(2) हर बच्चे को एक व्यक्ति के रूप में आदर दिया जाना चाहिए। ''अलग'' अच्छा या बुरा, बेहतर या बदतर नहीं है; ''अलग'' बस अलग है। हर बच्चा अलग होने के कारण हमें हर बच्चे पर निजी ध्यान देना आवश्यक है। हर बच्चा विशेष होने के कारण हमें नकारात्मक तुलनाओं से बचने की कोशिश करनी चाहिए। हर बच्चा व्यक्ति होने के कारण उस व्यक्ति में शक्तियों को देखने की कोशिश करनी चाहिए। उदाहरण के लिए, हो सकता है कि ज़िद्दी बच्चे में दृढ़ विश्वास की क्षमता हो; तीखे मिज़ाज वाला बच्चा, हो सकता है कि अधिक रचनात्मक हो। जो भी अन्तर हों, हर बच्चे को जैसा वह है उसी हाल में उसे स्वीकार किया जाना चाहिए।

(3) हर बच्चे को इन का ध्यान रखते हुए शिक्षा दी जानी (पाला-पोसा जाना) चाहिए। वर्षों से मैं कई माता-पिता को सुनता आ रहा हूं जो दुखी होते हैं कि ''हमने अपने सब बच्चों का पालन-पोषण एक ही तरह से किया, परन्तु जॉनी [या सूज़ी] खराब निकल गए। समझ नहीं आता कि क्या किया जाए!'' मैं माता-पिता की बात को रद्द नहीं कर रहा, परन्तु समस्या *शायद* यह है कि उन्होंने अपने सब बच्चों का पालन-पोषण ''एक ही तरह से'' किया है। शिक्षा देने के कुछ पहलू अलग-अलग नहीं हो सकते, परन्तु और पहलू हैं

जो अलग हो सकते हैं, और होने भी चाहिए। उदाहरण के लिए, हमें सही और गलत के परमेश्वर के नियमों को बदलने का अधिकार नहीं है, और हमें अपने बच्चों के साथ ''पसंदीदा खेल खेलने'' नहीं चाहिए। दूसरी ओर हम हर बच्चे की ''उसके ढंग से'' और परमेश्वर के ढंग से अगुआई कर सकते हैं। हम हर बच्चे के अच्छे गुणों को प्रोत्साहन दे सकते हैं और उसके कम स्वीकृत गुणों को नया मोड़ दे सकते हैं। हम हर बच्चे के साथ *काम करने वाले* पुरस्कार और दण्ड चुन सकते हैं।

(4) हर बच्चा इस बात का हकदार है कि हम उसे समझें। हमें हर बच्चे को व्यक्तिगत तौर पर, निजी तौर पर और निकट से जानना आवश्यक है। यह आवश्यक है, यह दिखाने के लिए कि हम उसकी परवाह करते हैं, उसे प्रभावी अनुशासन देने के लिए आवश्यक है, उसे शिक्षा देने के योग्य होने के लिए आवश्यक है। हम अपने बच्चों के बारे में कैसे जान सकते हैं ? पुस्तकों से हमें किसी विशेष आयु वर्ग के बारे में थोड़ा-बहुत पता चल जाता है। यह विचार करना कि जब हम उनकी उम्र के थे, तो हम कैसे थे, भी सहायक हो सकता है। परन्तु अपने बच्चे के साथ समय बिताने अर्थात समय की मात्रा और गुणवत्ता की जगह कोई नहीं ले सकता। हम अपने बच्चे के साथ काम करते, उसके साथ रहते हैं तो उसके साथ संवेदनशील रहें।[16]

अपने बच्चों को समझने के लिए चार्ल्स स्विंडॉल ने सुझाव दिया है, ''सबसे आवश्यक सामग्री *संवेदनशीलता* है। जो माता-पिता अपने बच्चे के प्रति सचमुच संवेदनशील हैं, उन्हें आमतौर पर अपने बच्चे को जानने की कम कठनाई आती है।'' उसने हास्यास्पद मॉटो के बारे में बताया जो उसके बच्चों ने उसे दिया था: ''नियत आहार या डाइट उन लोगों के लिए हैं, जो मोटे हैं ... और जो खा खा कर तंग पड़ चुके हैं।'' फिर उसने आगे जोड़ा:

> एक और प्रकार का मोटापा, जो शारीरिक मोटापे से कहीं अधिक गंभीर है *यह बच्चों के पालन-पोषण* में ... सम्पर्क से बाहर, अनभिज्ञ, समझ की और बोध की कमी होना है। एक शब्द में कहें तो यह संवेदनहीनता है।''बच्चों के पालन-पोषण का मोटापा'' से मेरा अभिप्राय है अपने बच्चों को निकाल देने की समस्या, उनके स्वभाव और आवश्यकताओं के प्रति रुचि न लेने अर्थात उनके प्रति लापरवाह और संवेदनहीन होने की आम समस्या है।[17]

पुनः आश्वासन

बच्चे का पालन-पोषण करने की ज़िम्मेदारी होना, बोझ भरा काम हो सकता है। वास्तव में माता-पिता जितने अधिक विवेकी होंगे, ज़िम्मेदारी उतनी ही परेशानी भरी होगी। संसार की स्थिति और उन जवान लोगों की गिनती, देखकर जो ''बुराई के मार्ग पर चलते हैं'' हमें प्रोत्साहन की आवश्यकता है। इसी कारण तीसरी बात पुन: आवश्वासन की है। हमारा वचन-पाठ हमें इन शब्दों में आशा देता है कि ''वह बुढ़ापे में भी उससे न हटेगा।''

पहले मैं इस बात पर ज़ोर देना चाहता हूं जो यह आयत *नहीं* कहती: यह आयत यह *नहीं* कहती कि ''बूढ़ा होने पर वह इसकी ओर वापस आ जाएगा।'' कई लोग इस विचार

में तसल्ली ढूंढ़ते हैं कि ''चाहे कहीं भी चला जाए मेरा बच्चा बिल्कुल बूढ़ा होने पर जब कुछ नहीं कर पाएगा तो पाप भी नहीं करेगा, तब वह उस मार्ग में वापस आ जाएग जो मैंने उसे बताया था।'' कई बच्चे भटक जाते हैं। उनके भटक जाने पर हम उम्मीद करते और प्रार्थना करते हैं कि उड़ाऊ पुत्र की तरह ही घर की याद उन्हें वापस ले आए (लूका 15)। परन्तु वचन यह नहीं कहता। अनुवादित इब्रानी शब्द ''बुढ़ापा'' का अर्थ ''ठोढ़ी पर बाल होना'' है। इसका अक्षरश: अनुवाद होगा ''दाढ़ी वाला।'' निजी तौर पर मैं घर छोड़ने से कई साल पहले दाढ़ी बनाने लगा था। इस आयत में ''बुढ़ापा'' शब्द ''स्वतन्त्रता की उस अवर्णनीय उम्र'' के लिए है[18] जब कोई बच्चा घर छोड़ने को तैयार होता है। यह आयत ज़ोर देती है कि जब बच्चा घर (और अपने माता-पिता के सीधे प्रभाव) को छोड़ता है तो वह उस शिक्षा को जो उसे दी गई थी, नहीं छोड़ेगा। यह आयत यह *नहीं* सिखाती कि यदि माता-पिता ने अपना काम सही ढंग से किया है तो वह उस शिक्षा को जो उसे मिली है, उसके लिए छोड़ पाना *असम्भव* होगा। ऐसा विचार ''विश्वास त्याग की असम्भावना'' की बाइबल से बाहर की शिक्षा का दूसरा रूप होगा (देखें 1 कुरिन्थियों 10:12)। इसके अलावा यह बच्चे की स्वतन्त्र नैतिक शक्ति का इनकार करना है, जिसका अर्थ यह है कि बच्चा अपने जीवन के लिए ज़िम्मेदार नहीं है, जो बाइबल की शिक्षा के उलट है (रोमियों 14:12)।

इस बात को समझें कि नीतिवचन 22:6 एक *कहावत* है। अपने स्वभाव से ही कहावत में एक सामान्य सच्चाई होती है, परन्तु आवश्यक नहीं कि यह वही सच्चाई हो।[19] यही बात आम बोलचाल की कहावतों में है: ''अरली टू बेड अरली टू राइज़, मेक्स ए मैन हैल्थी एण्ड वाइज़'' अर्थात ''जल्दी सोना, जल्दी जागना, मनुष्य को स्वस्थ, धनी और समझदार बनाता है'' वही सच्चाई नहीं है यानी जल्दी सोना और जल्दी जागना अपेक्षित लक्ष्यों को पूरा करने में योगदान दे सकता है, परन्तु यह उनकी गारण्टी नहीं है।[20] यही बात बाइबल की कहावतों में भी लागू होती है: ''ऐसा पुरुष, जो कामकाज में निपुण हो,[21] वह राजाओं के सम्मुख खड़ा होगा'' (नीतिवचन 22:29), परन्तु कई कुशल श्रमिक ऐसे हैं, जो कभी राजाओं के सामने खड़े नहीं हुए और न होंगे।[22]

माता-पिता का बच्चे के जीवन में पहला प्रभाव तो रहता है, परन्तु दूसरे प्रभाव अर्थात परिवार के दूसरे लोग, बच्चे के साथी और समाज भी महत्वपूर्ण हैं। माता-पिता की शिक्षा और बच्चे के अपने व्यक्तित्व के अलावा ये कारक जीवन में उसके मार्ग को तय करने में सहायक होते हैं।

यह बात सिद्ध होने के बाद कि वचन का हमारा यह भाग क्या नहीं सिखाता, तो फिर यह *क्या* सिखाता है? आशा का इसका संदेश क्या है? इसका आशावादी कथन तीहरा है। (1) बेशक आपके बच्चे के जीवन पर कई प्रभावों का असर हो सकता है परन्तु जितना असर *आपके* प्रभाव का हो सकता है उतना किसी और का नहीं। बच्चों के पालन-पोषण पर माहिर इस बात से सहमत हैं कि ''माता-पिता'' अपने बच्चों के ''निर्णायक आदर्श और निर्देशक'' हैं, क्योंकि उन पर उनका असर ''किसी भी व्यक्ति, कारक, तत्व या समूह'' से

अधिक होता है।[23]

(2) इस आयत की *सामान्य* सच्चाई यह है कि यदि हम सही ढंग से अपने बच्चों को शिक्षा देने की पूरी कोशिश करें तो वे भटकेंगे नहीं। विषमताएं उनके पक्ष में ही होंगी। एक लेखक ने इस वचन को इन शब्दों में व्यक्त किया है: ''अपने बच्चे की शिक्षा इस प्रकार से अपनाएं, जिससे यह परमेश्वर द्वारा दी गई विशेषताओं और प्रवृत्तियों से मेल खाती हो; जब वह परिपक्व होगा, तो उस शिक्षा से जो उसने पाई है, फिरेगा नहीं।''[24]

(3) आयत इस बात पर ज़ोर देती है कि अच्छी तरह सिखाया गया यह बच्चा, न सिखाए गए बच्चे के विपरीत, जिसके साथ कुछ नहीं जाता है, विरोधी संसार में विषमताओं को अपने पक्ष में लेकर जाता है।

नीतिवचन 22:6 की सामान्य सच्चाइयों को समझकर हम अपने बच्चों के पालन-पोषण की चुनौती बड़ी दृढ़ता से ले सकते हैं। परमेश्वर कहता है कि हम इसे कर सकते हैं। वह हमारी ओर है; वह हमारे साथ रहेगा!

सारांश

एक बार फिर मैंने बच्चों के पालन-पोषण की चुनौती पेश की है, जिसके लिए समय बल्कि बहुत समय की आवश्यकता है। इस बात को समझें कि आपके बच्चे आपके साथ हमेशा नहीं रहेंगे। समय बहुत जल्दी बीत जाता है! आपके तैयार होने से पहले बच्चे आपके हाथ से निकल जाएंगे।

हमारे बच्चे इतने कम समय के लिए हमारे पास हैं! ऐसा लगता है कि जैसे मेरी तीनों बेटियों का जन्म कल की ही बात हो, जबकि अब वे सब बड़ी हो गई हैं और घर से दूर चली गई हैं। उन्होंने अपने-अपने घर बसा लिए हैं। मैं आपको समय रहते चेतावनी देना चाहता हूं कि जितना हो सके अपने बच्चों को उस मार्ग की शिक्षा दें, जिसमें उन्हें चलना है ... ताकि बुढ़ापे में वे उसमें चल सकें।[25]

टिप्पणियां

[1]बिग स्प्रिंग, टैक्सस, चर्च ऑफ़ क्राइस्ट में क्लास में पढ़ाते समय पैरी कॉथम की पत्नी के साथ ऐसा हुआ। [2]समुद्र पार के पाठकों के लिए नोट: पिता की टिप्पणियों में विडम्बना का स्पर्श प्रतीत होता है: ''यह तो अच्छी बात है'' बिना मुस्कुराए कहा (या शायद त्योरी चढ़ाते हुए) का अर्थ हो सकता है, ''मैंने इससे भी अच्छी बातें देखी हैं!'' [3]''तीन R'' शिक्षा की तीन मूल बातें अंग्रेज़ी में रीडिन, राइटिंग, 'रिथमैटिक (यानी अर्थमैटिक) कहने का मज़ाक भरा ढंग है। [4]सामान्य की भांति आपको और उदाहरण देने चाहिए, जिनसे आपके सुनने वाले परिचित हों। उम्मीद है कि मेरे उदाहरण से आपको मेरी बात समझने में सहायता मिलेगी। [5]इस पाठ में बाद में ''बूढ़ा'' पर चर्चा देखें। [6]कार्ल ब्रिकन और पाल फाकनर के पास *फैमिली एनरिचमेंट सीरीज़* (फोर्टवर्थ, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं.,1982), शीर्षक से आडियो कैसेट की एक शृंखला है। पहले अंक में 1 और 2 टेपें ''फाइंडिंग टाइम विद योर मेट'' और ''मेकिंग टाइम विद योर किड्स'' हैं। यदि आप

की पहुंच कैसेटों तक हो तो इस पाठ की तैयारी के लिए आप इन दो टेपों को सुन सकते हैं। आप अपने सुनने वालों को भी ये टेपें सुनने को कह सकते हैं। [7]1 राजाओं 20 में शब्दों का एक जाल है, परन्तु उन्हें उन लोगों की समस्या के बारे में भी बताने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है, जो अति व्यस्त हों। [8]यदि आप इस पाठ का इस्तेमाल क्लास में करते हैं तो आप अपने छात्रों से कह सकते हैं, ''आपके दिमाग में शिक्षा देने की और कौन सी बातें आ रही हैं?'' [9]KJV में "fear" और ''reverence'' शब्दों में भी ''आदर'' का ही विचार मिलता है। [10]सिखाते समय मैं आम तौर पर कहता हूं ''डैड को मॉम का आदर करना चाहिए।''

[11]नीतिवचन 31:28 भी देखें। [12]जेम्स डॉब्सन, *डेयर टू डिस्पलिन* (न्यू यार्क: बैंटम बुक्स, 1977), 19. [13]यदि आप प्राप्त कर सकते हैं तो पढ़ने के लिए अच्छा स्रोत बॉब हैंड्रन, ''रिसपेक्ट,'' *चोज़न फ़ॉर रिचस* (आस्टिन, टैक्सस: एसपीसी पब्लिकेशंस, 1978), 148-62 की सिफारिश की जाती है। [14]यह मूल अर्थ कुछ बाइबलों में टिप्पणी के रूप में मिलता है। [15]हेम जी.गिनोट, *बिटवीन पेरेंट एण्ड चाइल्ड* (न्यू यार्क: मैकमिलन कं., 1965), 207. [16]बच्चा भी अपने कामों के द्वारा जाना जाता है (नीतिवचन 20:11)। [17]चार्ल्स स्विंडॉल, *यू एण्ड योर चाइल्ड* (न्यू यार्क: थॉमस नेल्सन कं., 1977), 17. [18]वही, 65. [19]बाइबल की किसी आयत की व्याख्या करते समय एक प्रश्न जो पूछा जाना आवश्यक है, वह है कि ''यह किस प्रकार का साहित्य है?'' कविता (जैसे भजन संहिता में) की व्याख्या कविता की भाषा में होनी आवश्यक है। अपोकलप्टिक साहित्य (जैसे प्रकाशितवाक्य कर पुस्तक में) की व्याख्या अपोकलप्टिक भाषा (यानी अति सांकेतिक भाषा) में होनी आवश्यक है। वैसे ही नीतिवचन या कहावतें साहित्य की एक विशेष किस्म हैं और उनकी व्याख्या उन्हीं के अनुरूप होनी चाहिए। आमतौर पर नीतिवचन में किसी सच्चाई को स्थापित करने के बजाय उस सच्चाई का उदाहरण दिया गया होता है। [20]यदि इस कहावत से आप परिचित नहीं है तो ऐसी और किसी कहावत का उदाहरण दे सकते हैं।

[21]KJVमें ''diligent in his business'' है। आप जिस भी अनुवाद का इस्तेमाल करें, संदेश एक ही है। [22]बाइबल की और कहावतों का इस्तेमाल इस सच्चाई को साबित करने के लिए किया जा सकता है। ऐसे उदाहरणों का इस्तेमाल करें, जिनसे कहावतों की प्रकृति आपके सुनने वालों तक पहुंचाना आसान हो। [23]लिंडा एण्ड रिचर्ड आयर, *टीचिंग योर चिल्ड्रन वैल्यूस* (न्यू यार्क: साइमन एण्ड शुस्टर, 1993), 5, 24. [24]स्विंडॉल, 27. [25]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में किया जाता है तो विवाह और घर के विषय पर बोलते समय मैं सही मूल निमंत्रण देता हूं। घर पर बोलने के समय मैं इस बात पर ज़ोर देता हूं, कि यह *मसीही घर* होना चाहिए, जिसका अर्थ यह है कि घर सदस्य विश्वासी मसीही होना चाहिए। फिर मैं सबको बताता हूं कि मसीही कैसे बनना है या वापस कैसे आना है और उनसे यह मानने का आग्रह करता हूं।

प्रचारकों और सिखाने वालों के लिए नोट्स

वे इस प्रस्तुति का इस्तेमाल क्लास में करने के लिए मैं कई बार ''बच्चा'' और ''बूढ़ा'' के अर्थों से सम्बन्धित बातें एक आसान चार्ट पर बना देता हूं:

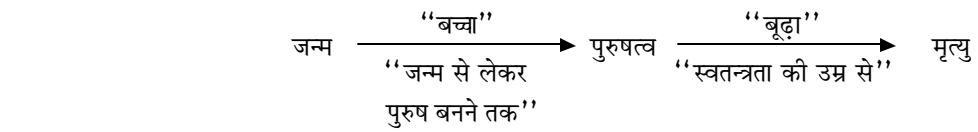

यह चर्चा करते समय कि नीतिवचन 22:6 यह सिखाता है या नहीं कि यदि आप ''बच्चे'' को जब वह छोटा है, शिक्षा दें कि बाद में ''बुढ़ापे'' में वह इससे फिरे नहीं, मैं

इसी उदाहरण का इस्तेमाल करता हूं। इस आयत की मुख्य बात यह है कि यदि आप अपने बच्चे को शिक्षा देते रहते हैं, जब तक वह आपके साथ रहता है तो घर से निकलने के बाद भी वह उस शिक्षा से फिरेगा नहीं।